ISSN 2320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO 64395
RNI REGISTRATION NO MAHMUL/2013/49893

RESEARCH ARENA

A MULTI-DISCIPLINARY INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol 5 | Issue 11 | Feb 2018

समकालीन हिंदी पद्य साहित्य विवेचन

SPECIAL ISSUE NO. 2

संपादक

डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे

CS-26

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE

RESEARCH ARENA
ISSN 2320-6263
Vol 5. Issue 11. Feb 2018. pp. 233-236
Paper received: 01 Feb 2018.
Paper accepted: 16 Feb 2018
© VISHWABHARATI Research Centre.

'साये में धूप' : समकालीन राजनीतिक बोध

डॉ. अमोल पालकर

दुष्यंत कुमार आधुनिक हिंदी गजलकारों में सर्वोपरि स्थान रखते हैं । उनकी गजलें भरतीय समाजव्यवस्था का सम-सामायिक चित्र प्रस्तुत करने में बहुत ही सक्षम रही हैं । दुष्यंत कुमार की विचारानुभूति जनता के मन की भावना और अपेक्षाएँ थी जो उनकी गज़लों के माध्यम से अभिव्यक्त हो चुकी हैं । उनकी गजले वास्तविकता से रू-ब-रू होने के कारण पाठकों के हृदय को झकझोर जाती है ।

दुष्यंत कुमार के मसाये में धूपफ गज़ल-संग्रह ने हिंदी गज़ल को एक नवीन आयाम, दिशा तथा प्रतिष्ठा दी । उन्होंने हिंदी गजल को नवीनता में ढालकर उसके नवीन मानदंड स्थापित किए । समकालीन हिंदी गजलकारों में दुष्यंतकुमार काम नाम अग्रणी रहा है । डॉ पद्मा पाटील कहती हैं उनकी गजलें आशिकी दायरे से स्वतंत्र होकर आम आदमी की पीड़ा-वेदना को समझती है तथा उन्हें दूर करने का प्रयास भी करती है । (डॉ पद्मा पाटील, साये में धूप, समकालीन सृजन संदर्भ, भूमिका से) दुष्यंत कुमार ने समकालीन राजनीति का खोखलापन, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन में हो रहे मूल्यों के ऱ्हास तथा विसंगतियों को, आम आदमी के दूख- दर्द को काफी गहराई से व्यक्त किया है ।

डॉ. अमोल पालकर: स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, बलभीम महाविद्यालय, बीड